अमर उजाला
amarujala.com
बरेली
रविवार, 17 सितंबर 2017

PAGE NO. : 04 BOTTOM

कृत्रिम गर्भाधान एवं टेस्ट ट्यूब बेबी

नि.संतान दंपत्तियों के लिए नई आशा

भारत एक विविधता भरा देश है जहां जनसंख्या का विस्फोट हो रहा है, वहीं दूसरी ओर निःसंतान दंपत्तियों की संख्या में भी बड़ी तेजी से बढ़ोत्तरी हो रही हैं जिसके अनगिनत कारण है। अब से एक दशक पहले पुरूषों को दोषी नहीं माना जाता था किन्तु कम्प्यूटर युग की तनावपूर्ण जिन्दगी ने पुरूषों की नपुंसकता को बढ़ा दिया है। ऐसे दंपत्ति अक्सर नीम हकीम एवं जड़ी बूटियों के फेर में आसानी से आ जाते है, और न केवल पैसा व बहुमूल्य समय बर्बाद करते है बल्कि इन झोलाछाप डाक्टरों की औषधियों से अपना शरीर व जननांगों को और नुकसान पहुंचाते हैं। समाज के डर से ऐसे दंपत्ति चोरी-छुपे घूमन्तू एवं तथाकथित सैक्स स्पेशलिस्ट के पास लुटते रहते हैं।

कृत्रिम प्रजनन तकनीक ने पिछले एक दशक में क्रांतिकारी ऊँचाइयों को छुआ है। इस क्षेत्र में नई विधियों के आने से कई दंपत्तियों को राहत मिली हैं। यह है कृत्रिम गर्भाधान आई यू आई एवं टेस्ट ट्यूब बेबी। कृत्रिम गर्भाधान उन दंपत्तियों का किया जाता है जहाँ पुरूष में शुक्राणुओं की संख्या बहुत कम या निल है। इस प्रक्रिया में कुछ हारमोनल दवाओं के द्वारा स्त्री के ज्यादा अण्डे बनाए जाते हैं व इनके टूटने के समय पुरूष के शुक्राणुओं को प्रॉसेस करके एक पतली नली

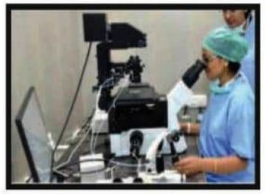

की मदद से बच्चेदानी में रख दिया जाता है। यह प्रक्रिया बिल्कुल दर्द रहित है तथा किसी भी तरह के ऑपरेशन की आवश्यकता नहीं है। पुरूष में शुक्राणुओं की संख्या निल होने पर मान्यता प्राप्त शुक्राणु बैंक से शुक्राणु लिए जाते हैं। इस बैंक में

उच्चकोटि के एवं मेडिकली सुरक्षित शुक्राणु उपलब्ध रहते हैं। हर वीर्य सैम्पल पर खून का ग्रुप, बालों का रंग, आँखों व खाल का रंग चिन्हित रहता है। यह प्रक्रिया बहुत ही सफल है। आई.वी.एफ. प्रक्रिया बांझ दंपत्तियों के लिए एक वरदान है। यह विश्व की उच्चतम तकनीकों में से

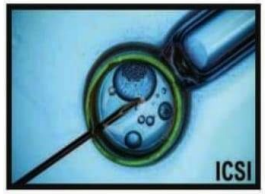

एक है। प्रारम्भ में केवल विदेशों में उपलब्ध यह तकनीक अब एस.आर.एम.एस. बरेली में भी सभी सुविधाओं के साथ उपलब्ध है। इस विधि में अण्डों व शुक्राणुओं का निषेचन शरीर के बाहर एक सुविधा सम्पन्न लैबोरेटरी में होता है। इसमें हारमोनल इंजेक्शन देकर अण्डाशय में कई अण्डे बनाये जाते हैं तथा अण्डों के पकने पर एक पतली सुई के द्वारा टेस्ट ट्यूब में निकाल लिया जाता है। इसी टेस्ट ट्यूब में शुक्राणु डालकर निषेचन कराया जाता है। भ्रूण की आयु 48 घंटो की होने पर उसे स्त्री की बच्चेदानी में स्थापित कर दिया जाता है। इस प्रक्रिया में कई विदेशी मशीनों की आवश्यकता होती है। टेस्ट ट्यूब बेबी उन स्त्रियों के लिए वरदान हैं जिनकी दोनो फॉलोपियन ट्यूब बंद है या जिनकी विवाह के कई वर्ष पूरे होने के बाद भी संतान सुख प्राप्त नहीं होता है। जिन स्त्रियों के किसी कारणवश अपने अण्डे नहीं बनते हैं, उनके लिए अण्डों के बैंकी की सुविधा भी होती है। जिन स्त्रियों की माहवारी बंद हो चुकी है, उनके लिए भी यह विधि कारगर है। बरेली के श्री राममूर्ति स्मारक अस्पताल में भी यह सभी प्रक्रिया विशेष तकनीकों के द्वारा मरीजों के लिए उपलब्ध है।

शून्य शुक्राणु वाले पुरूषों में भी अपार संभावना

ऐसे पुरूषों मे टेस्टीक्युलर बायोप्सी (टीईएसई) की जाती है। इसमें जहां स्पर्म बनते हैं, वहां से एक टुकड़ा लेकर लैब में टिश्यू में स्पर्म की उपस्थिति का पता लगाया जाता है। अगर उस टिश्यू में स्पर्म उपलब्ध होते है तो इक्सी प्रक्रिया के माध्यम से इन स्पर्म में महिला के अण्डाणुओं को फर्टिलाइज्ड कर भ्रूण बनाया जा सकता है। इस तरह से अपने ही शुक्राणुओं से पिता बन सकते हैं। अगर टिश्यू में स्पर्म नहीं मिलते हैं तो डोनर स्पर्म की सहायता से भी पिता बन सकते हैं।

मृत शुक्राणु व धीमी गति

पुरूष में शुक्राणु की गति धीमी होने की वजह से वह अण्डे को निषेचित करने में असमर्थ होते हैं। इस स्थिति में इक्सी तकनीक ऐसे पुरूषों के लिए वरदान साबित हुई है। मृत शुक्राणु के लिए हाइपो ऑक्मोटिक स्वेलिंग तकनीक के माध्यम से जीवित शुक्राणु का चयन किया जाता है व इक्सी के माध्यम से इनको अण्डे में निषेचित कर भ्रूण तैयार किया जाता है।

Advt.

इनफर्टीलिटी एवं आई.वी.एफ. विशेषज्ञ डॉक्टर पैनल
डॉ.जे.के.गोयल | डॉ.शशि बाला आर्या | डॉ.रुचिका गोयल
डॉ.मृदु सिन्हा | डॉ.प्रियंका शर्मा (एम्ब्रोलॉजिस्ट)
श्री राम मूर्ति स्मारक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज
बरेली। मो.9458704444, 9458704000